

lR; opu

ikxke u- 324

: r & 1%17 & 2%3

: r 1%17 में हम पढ़ते हैं,

“जहाँ तू मरेगी वहाँ मैं भी मरूँगी, और वहीं मुझे मिट्टी दी जाएगी। यदि मृत्यु छोड़ और किसी कारण मैं तुझ से अलग होऊँ तो यहोवा मुझ से वैसा ही वरन् उससे भी अधिक करे।”

रूत का यह निर्णय सातगुना था और परमेश्वर का सच्चा चुनाव था। मैं चाहता हूँ कि आप इस पर विशेष ध्यान दें क्योंकि आज के समय में यह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण विषय है जब विश्वासी परमेश्वर के प्रति समर्पण के अनेक निर्णय लेते हैं परन्तु निभाते नहीं हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि परमेश्वर हमें इसका उत्तरदायी ठहराता है। आज हमें ऐसे मनुष्यों की आवश्यकता है जो परमेश्वर के लिए सच्चा निर्णय लें। रूत का निर्णय ऐसा ही एक सच्चा निर्णय था।

सबसे पहले तो रूत ने कहा, “जिधर तू जाए उधर मैं भी जाऊँगी।” दूसरे शब्दों में उसने नाओमी से कहा, “मैं ने तेरी ही साथ जाने का निर्णय लिया है और मैं तेरे साथ जाऊँगी। मैं इस्राएल में प्रवेश के लिए ऐसा नहीं कह रही हूँ।” उसका दूसरा निर्णय था, “जहाँ तू टिके वहाँ मैं भी टिकूँगी।” दूसरे शब्दों में वह नाओमी के साथ जाएगी ही नहीं, उसके साथ अपनी पहचान बनाए रखेगी। “मैं तेरी दरिद्रता को अपनाऊँगी।” वह उसी नाम को धारण किए हुए है जो प्रफुल्ल सूर्यज्योति के पुत्र से विवाह करते समय उसका था। वह नाओमी के साथ ही रहेगी। उसका तीसरा निर्णय था, “तेरे लोग मेरे लोग होंगे।” मैं अपने मूर्तिपूजक लोगों को त्याग कर परमेश्वर के लोगों से पहचान बनाऊँगी। मेरे मित्रों, आप परमेश्वर के लिए कोई निर्णय नहीं ले पाएँगे जब तक कि आप परमेश्वर के लोगों के साथ अपनी पहचान न बनाएँ। इसके बिना कुछ भी करना असम्भव है। रूत जानती थी। उसने कहा, “तू कहती है कि मुझे जाति—बाहर माना जाएगा। तो ठीक है मैं जाति—बाहर ही रहूँगी परन्तु तेरे लोग मेरे लोग होंगे।” अब चौथा निर्णय था, “तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा।” अब मैं आपको समझा सकता हूँ कि इस युवती, रूत ने

नाओमी के दुर्बल पुत्र से विवाह क्यों किया, उस परदेशी से जो रोटी और स्तुति के घर से निकल उसके पड़ोस में आया था। मेरे विचार में इसका कारण स्पष्ट है। उसने पहली बार जीवित और सच्चे परमेश्वर के बारे में सुना था। उसकी भेंट उस परिवार से हुई जो जीवित एवं सच्चे परमेश्वर को जानता था। उसने उस परिवार में विवाह इसलिए किया कि वह जीवित एवं सच्चे परमेश्वर को जानने लगी थी। “तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा।” कैसा अद्भुत निर्णय उसने लिया। यही नहीं, उसने यहाँ तक कहा, “तू जहाँ मरेगी वहाँ मैं भी मरूँगी।” यह आपकी और मेरी तुलना में रूत के लिए अधिक अर्थपूर्ण था। उसके कहने का अर्थ था, “इस्राएल की आशा मेरी आशा है।” इस्राएल को क्या यह विश्वास था कि एक दिन वे मृतकों में से फिर जी उठेंगे और उस देश में वास करेंगे। अब्राहम की यह आशा थी। उसे कभी विश्वास न था कि वह मरणोपरान्त स्वर्ग जाएगा। उसका विश्वास था कि इस पृथ्वी पर ही वह मृतकों में से जी उठेगा। यही कारण था कि उसने मकपेला की गुफा खरीदी और सारा को वहाँ दफन किया। अब्राहम को भी वहीं दफनाया गया था। इसहाक को भी यही आशा थी। याकूब जिसकी मृत्यु मिस्र देश में हुई थी उसने भी यही कहा था कि उसे उसके पूर्वजों के साथ दफन किया जाए। इसका कारण यही था कि उन्हें मृत्युकोत्थान की आशा थी। इब्रानियों अध्याय 11 पद 10 के अनुसार “वे उस स्थिर नींववाले नगर की बाट जोहता था, जिसका रचनेवाला और बनानेवाला परमेश्वर है।” एक दिन इस पृथ्वी पर यह सच होगा। यह पुराने नियम की आशा है। यूहन्ना अध्याय 14 पद 2 में प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों से कहा था, “मैं जाता हूँ कि तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ...” तो उनके लिए यह बात बड़ी विचित्र एवं नई थी कि वह उसे इस पृथ्वी पर अनन्तकालीन घर देगा। रूत ने नाओमी से केवल यही नहीं कहा कि जहाँ वह मरेगी वहाँ वह भी मरेगी परन्तु यह कि, “वहीं मुझे मिट्टी दी जाएगी।” आप स्वयं देख सकते हैं कि उसकी आशा उस देश में है जैसे अब्राहम, इसहाक और याकूब को थी। उसमें पुराने नियम की आशा वास करती थी। अब उसका सातवाँ निर्णय था, “यदि मृत्यु छोड़ और किसी कारण मैं तुझ से अलग होऊँ तो यहोवा मुझ से वैसा ही वरन् उससे भी अधिक करे।” कैसे प्रशंसनीय निर्णय! उसने यह नहीं कहा कि यह निर्णय एक दिन या एक घण्टे का है। “मेरा यह निर्णय अनन्तकालीन है।”

हम रूत में सच्चा मनफिराव देखते हैं। आज हम मनफिराव या पश्चाताप के बारे में बहुत सुनते हैं। और आम धारणा यह है कि पश्चाताप का अर्थ है कुछ आँसू टपकाना। आपको 2 कुरिन्थियों अध्याय 7 का पद 10 स्मरण होगा, “क्योंकि परमेश्वर—भक्ति का शोक ऐसा पश्चाताप उत्पन्न करता है जिसका परिणाम उद्धार है।” ध्यान दीजिए कि पश्चाताप उद्धार नहीं है। उद्धार पश्चाताप का परिणाम है। संसार का शोक मृत्यु लाता है। संसार का शोक क्या है? आँसू

बहाना। सांसारिक मनुष्य आँसू बहाता है। अब चौराहे पर खड़ी इन तीनों स्त्रियों को फिर से देखें। ओर्पा ने भी उतने ही आँसू बहाए जितने रूत ने बहाए थे परन्तु इन दोनों युवतियों में क्या अन्तर था? अन्तर स्पष्ट है। ओर्पा ने अनेक आँसू बहाए परन्तु उनमें पश्चाताप नहीं था। सच्चा पश्चाताप क्या है? 2 कुरिन्थियों 7:10 में जो शब्द है उसका अर्थ है मन को बदल देना अर्थात् जिस दिशा में अग्रसर हैं उस दिशा से मुँह मोड़कर विपरीत दिशा में चल पड़ना। अनेक जन उस स्थान पर आ तो जाते हैं जहाँ उनका विवेक कहता है कि उन्हें बदलना है या वे कहते हैं कि उन्होंने ऐसा किया है परन्तु वे कुछ आँसू बहाते हैं और उसी दिशा में चलते रहते हैं। ओर्पा ने भी ऐसा ही किया था। उसने रूत के साथ आँसू बहाए परन्तु दिशा बदल कर बैतलहम नहीं गई और न ही परमेश्वर को अपनाने का निर्णय लिया। वह मूर्तिपूजा में लौट गई। आज ऐसे अनेक जन हैं। वे आँसू बहाते हैं परन्तु आँसू मन परिवर्तन नहीं है। वह मनपरिवर्तन का उत्पाद हो सकते हैं।

मेरे पिता एक छोटे जहाज़ के बारे में कहा करते थे जो उनके बचपन के समय में चलता था। वह जहाज़ जब धारा के विरुद्ध ऊपर जाता था और यदि उसने सीटी बजाई तो वह पीछे लौटने लगता था क्योंकि उसमें दोनों कामों के लिए भाप पर्याप्त नहीं होती थी। आज ऐसे अनेक जन हैं। वे मसीह के उद्धारक अनुभव को कभी प्राप्त नहीं कर पाए हैं। वे अपने पापों पर बहुत आँसू बहाते हैं – वे सीटी बजाते हैं – वे अत्यधिक भावनात्मक हो जाते हैं। वे भावना से भरी गवाही देते हैं परन्तु उनका जीवन उचित नहीं है। मैं अनेक मनुष्यों को जानता हूँ जो गवाही देकर श्रोताओं को रुला देते हैं। उनकी वाणी में आँसू हैं। मैं उन पर कभी भरोसा नहीं करता। मैं उन्हें नया जन्म प्राप्त मनुष्य नहीं मानता। वे भावनात्मक बातें करते हैं। वे ओर्पा के समान हैं।

अपनी सेवा में मैं ने आँसुओं पर भरोसा करना छोड़ दिया है। पहले तो मैं करता था। मैं जानता हूँ कि ये आँसू बहानेवाले वास्तव में निर्णय नहीं ले सकते हैं। एक मनुष्य जिसकी आँखें सूखी हैं वह मसीह के लिए सच्चा निर्णय ले सकता है जो सच्चा होगा।

वर्षों पूर्व जब मैं कलीसिया का पासबान था तब ईस्टर की सुबह दो दम्पति सामने आए वे रो रहे थे और कुछ बुदबुदा रहे थे। हमारी समझ में नहीं आया कि वे क्या कह रहे थे परन्तु उन्होंने कलीसियाई अगुओं पर अपने उद्धार का बड़ा अच्छा प्रभाव डाला। वे ढोंगी थे। मैं ने उन्हें दो आराधना सभा से निकाला और मेरे बाद आनेवाले पासबान ने मुझे बताया कि उसने भी ऐसा ही किया। दूसरा दम्पति रो नहीं रहा था। अब क्योंकि उनकी आँखों में आँसू नहीं थे इसलिए हमारे एक प्राचीन ने मुझे अलग ले जाकर पूछा, “क्या आप सोचते हैं कि उनमें मन फिराव आया

है?" यह लगभग 25 वर्ष पुरानी बात है और मैं उनसे कभी-कभी भेंट भी कर पाता हूँ। वे आज भी प्रभु में दृढ़ हैं। मैं आपसे एक व्यक्तिगत प्रश्न पूछना चाहता हूँ, "क्या आपने मसीह के निमित्त सच्चा निर्णय लिया है या केवल आँसू बहाए हैं?" आँसू अपने आप में अर्थहीन हैं और सांसारिक शोक मृत्यु लाता है। मेरे मित्रों ऐसा पश्चाताप किसी काम का नहीं है परन्तु सच्चा पश्चाताप खेदित मन का नहीं होता है। वह उद्धार के मार्ग पर ले चलता है और आप में रूत के समान सच्चा मनफिराव होगा।

रूत ने परमेश्वर के लिए सच्चा निर्णय लिया। उसने कहा, "मैं दरिद्रता स्वीकार करती हूँ, मैं जाति-बाहर होना स्वीकार करती हूँ, मैं आजीवन विधवा रहना भी स्वीकार करती हूँ।" वह परमेश्वर के लिए यह सब स्वीकार कर रही थी। उसने दृढ़ संकल्प कर लिया था कि वह नाओमी के साथ बैतलहम जाएगी।

प्रफुल्ल सूर्यज्योति रूत को जानती थी –

: r 1१18 में हम पढ़ते हैं,

*"जब उसने यह देखा कि वह मेरे संग चलने को स्थिर है,
तब उसने उससे और कुछ न कहा।"*

वह जानती थी कि रूत का निर्णय बदल नहीं सकता। अतः उसने रूत को बाध्य नहीं किया।

: r 1१19 में हम पढ़ते हैं,

*"अतः वे दोनों चल निकलीं और बैतलहम को पहुँची।
उनके बैतलहम में पहुँचने पर सारे नगर में उनके कारण
हलचल मच गई; और स्त्रियाँ कहने लगीं, क्या यह नाओमी
है?"*

अब वह बिसरा परिवार घर लौटा परन्तु वह परिवार था ही कहाँ। केवल प्रफुल्ल सूर्यज्योति जो अब पहचान में नहीं आ रही थी और एक युवती रूत मात्र ही उस परिवार में थी। वहाँ के लोगों ने पूछा, "क्या यह नाओमी है?" क्या यह प्रफुल्ल सूर्यज्योति है?

: r 1१20&21v में हम पढ़ते हैं,

*“उसने उनसे कहा, मुझे नाओमी न कहो, मुझे मारा कहो,
क्योंकि सर्वशक्तिमान् ने मुझे को बड़ा दुःख दिया है। मैं
भरी पूरी चली गई थी, परन्तु यहोवा ने मुझे छूछी करके
लौटाया है।”*

अब मैं गणित तो अधिक जानता नहीं परन्तु यह अवश्य जानता हूँ कि पूरा और खाली में बहुत बड़ा अन्तर है। शून्य और कुछ में संख्याओं का अन्तर है। एक ओर खाली है और एक ओर भरा-पूरा है। नाओमी भरी पूरी गई थी और खाली लौटी है। मित्रों, क्या मैं यह कहूँ कि आप परमेश्वर की सन्तान हैं तो आप स्वर्ग की सब आशीषों से भरे-पूरे हैं और आपके पास मसीह में सब कुछ है। जब आप उसकी उपस्थिति से दूर हो जाते हैं और उसकी सहभागिता से वंचित हो जाते हैं तब आपको कुछ पता चलता है। आपको तब समझ में आता है कि आप परदेश में मार खा रहे हैं। और जब वहाँ से घर लौटते हैं तब आप खाली होते हैं। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि आप खाली घर लौटे, जैसा उड़ाऊ पुत्र ने किया था। आप देखेंगे कि पिता बाहें फैलाए आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। वह आपको ऐसी आशीषें देगा जैसी आपने पहले कभी नहीं पाईं। वह आपके साथ अति उत्तम व्यवहार करेगा। उड़ाऊ पुत्र के साथ ऐसा ही हुआ था। उसे अच्छे वस्त्र पहनाए गए उसके लिए पला हुआ बछड़ा काटा गया और आनन्द मनाया गया। यह सब उस पुत्र के लिए था जो घर लौट आया।

नाओमी ने अपनी सहेलियों से कहा कि उसे नाओमी नहीं, मारा कहें — दुखियारी। उसने कहा,

: r 1॥21c में हम पढ़ते हैं,

*“इसलिये जब कि यहोवा ही ने मेरे विरुद्ध साक्षी दी, और
सर्वशक्तिमान् ने मुझे दुःख दिया है, फिर तुम मुझे क्यों
नाओमी कहती हो?”*

आप सोचेंगे कि उन्होंने उसे मारा पुकारना आरम्भ कर दिया होगा, नहीं। परमेश्वर का आत्मा ऐसे ही छोड़ देता है। इस प्रकार नाओमी घर लौटी। परमेश्वर का आत्मा कहता है कि वह फिर से प्रफुल्ल सूर्यज्योति होगी।

: r 1॥22 में हम पढ़ते हैं,

“इस प्रकार नाओमी अपनी मोआबिन बहू रूत के साथ लौटी, जो मोआब के देश से आई थी। वे जौ कटने के समय के आरम्भ में बैतलहम पहुँचीं।”

बैतलहम में आने का यह समय अच्छा था। हमने मोआब को पीछे छोड़ दिया है और अब अगले अध्याय में हम बोआज़ के खेतों में जाएँगे। उसके खेत भी बैतलहम में ही थे।

v/;k; 2

fo" k; % बोअज़ के खेत में

: r 2%1 में हम पढ़ते हैं,

“नाओमी के पति एलीमेलेक के कुल में उसका एक बड़ा धनी कुटुम्बी था, जिसका नाम बोअज़ था।”

यहाँ हमारा परिचय बोअज़ से कराया गया है। वह कहानी का मुख्य नायक है। वह हमारे समक्ष कुटुम्बी मुक्तिदाता की भूमिका निभाएगा परन्तु कुछ समय बाद। यहाँ ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि उसे आरम्भ में ही नाओमी के पति का परिजन बताया गया — “एलीमेलेक के कुल में उसका एक बड़ा धनी कुटुम्बी था।” मैं इसे प्रभु यीशु का प्रतीक न मानकर आगे नहीं बढ़ पाऊँगा। आपके और मेरे लिए भी कहा जा सकता है कि हमारा एक कुटुम्बी है — इब्रानियों अध्याय 7:26 में लिखा है, “पवित्र और निष्कपट और निर्मल और पापियों से अलग...” वही एक है जो हमें सर्वांगीण उद्धार प्रदान कर सकता है। बोअज़ का अर्थ है, “शक्ति।” वह धन की शक्ति रखता था। मुझे बताया गया है कि इसका अनुवाद, “सामर्थी योद्धा” भी किया जा सकता है। उसे महान वकील भी कह सकते हैं। बोअज़ के सम्बन्ध में ये तीनों अर्थ प्रासंगिक हैं। वह सामर्थी योद्धा है, वह धन-सम्पदा में सामर्थी है, वह महान वकील है। हमारा परिचय एलीमेलेक के इस कुटुम्बी से करवाया जा रहा है।

: r 2%2 में हम पढ़ते हैं,

“मोआबिन रूत ने नाओमी से कहा, “मुझे किसी खेत में जाने दे, कि जो मुझ पर अनुग्रह की दृष्टि करे, उसके पीछे-पीछे मैं सिला बीनती जाऊँ। उसने कहा, चली जा, बेटा।”

यहाँ हमें तीन अति विचित्र नियम देखने को मिलते हैं क्योंकि हमारे नियमों में ऐसा कुछ नहीं है। यह मूसा की व्यवस्था थी कि कटनी पर खेत में गिरी फसल गरीबों को उठाने दी जाए। यह गरीबों की सुधि लेने की परमेश्वर की अपनी रीति थी। नाओमी और रूत बहुत गरीब

थे। रूत ने कहा कि वह जाकर खेत में जाकर सिला बीने, जो यह स्पष्ट प्रगट करता है कि वे बहुत गरीब थे।

हम इस नियम का सन्दर्भ देखेंगे। इसका उल्लेख अनेक स्थानों में किया गया है। उदाहरण के लिए लैव्यव्यवस्था 19:9-10 देखें, “फिर जब तुम अपने देश के खेत काटो तब अपने खेत के कोने कोने तक पूरा न काटना, और काटे हुए खेत की गिरी पड़ी बालों को न चुनना। और अपनी दाख की बारी का दाना-दाना न तोड़ लेना, और अपनी दाख की बारी के झड़े हुए अंगूरों को न बटोरना; उन्हें दीन और परदेशी लोगों के लिये छोड़ देना; मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।” परमेश्वर ने अपनी प्रजा को आदेश दिया था कि वे गरीबों की सुधि लें और इस विचित्र विधि को अपनाएँ। परमेश्वर के पास राहत कार्य नहीं थे और न ही गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम थे कि गरीबों को कोष से पैसा दिया जाए। मेरे विचार में परमेश्वर का यह प्रावधान बड़ी बुद्धिमानी का था। उन्हें परिश्रम करके सिला बीनना होता था। लैव्यव्यवस्था 23:22 में खेत के स्वामियों के लिए निर्देश हैं, “जब तुम अपने देश में के खेत काटो तब अपने खेत के कोनों को पूरी रीति से न काटना, और खेत में गिरी हुई बालों को न इकट्ठा करना; उसे दीनहीन और परदेशी के लिये छोड़ देना। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।” और अन्तिम सन्दर्भ है व्यवस्थाविवरण 24:19, “जब तू अपने पक्के खेत को काटे, और एक पूला खेत में भूल से छूट जाए, तो उसे लेने को फिर से न लौट जाना; वह परदेशी, अनाथ, और विधवा के लिये पड़ा रहे, इसलिये कि परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में तुझ को आशीष दे।” उस युग में गरीबों की सुधि लेने की यह परमेश्वर की रीति थी। उसने उन्हें राहत कोष में नामांकित नहीं किया और न ही खाद्यसामग्री की पंक्ति में खड़ा किया। उसने उन्हें दया का पात्र नहीं बनाया। उसने उनके लिए कुछ काम नियुक्त किया। उन्हें कुछ पाने के लिए काम करना पड़ता था। उन्हें खेतों में जाकर हाथ से अन्न बीनना पड़ता था। उस युग में कटाई के समय लगभग तीस प्रतिशत अन्न खेतों में गिर जाता था। आज हाथ से काम करना अधिक कार्यकुशल नहीं माना जाता है। उन्हें परमेश्वर का निर्देश था कि वे एक ही बार खेत में जाए, दूसरी बार नहीं। परमेश्वर ने कहा, “एक बार कटनी करने के पश्चात दीनहीनों और विधवाओं और अनाथों को खेत में आने दो।” मेरे विचार में परमेश्वर की यह व्यवस्था अति उत्तम थी। आज की आधुनिक, राजनीतिक अर्थव्यवस्था में यह विधि अनुकूल है परन्तु रूत के युग में यह कार्यकारी थी जब तीस प्रतिशत अन्न खेतों में गिरता था। आज तो ऐसी मशीनें हैं जो अन्न की कटनी, और दावनी करके उसे बोरो में हाथ के हाथ भर देती हैं। यदि एक दाना अन्न का गिर भी जाए तो मशीन की भुजा उसे उठाकर बोरे में डाल देती है। आज खेत में कुछ नहीं बचता है। यह परमेश्वर की व्यवस्था थी क्योंकि गरीबों को

नगण्य समझा जाता था। मेरे मित्रों, परमेश्वर को गरीबों की चिन्ता है। केवल परमेश्वर के वचन में ही गरीबों के लिए स्थान है। आप स्वयं ही संसार में देख सकते हैं। आज हम पूर्वजों के परिश्रम का फल खा रहे हैं। हमें परमेश्वर की आशीर्ष प्राप्त हैं। आप में से अनेक जन गरीबी को स्मरण कर सकते हैं। मैं स्वयं भी एक अत्यधिक गरीब बालक था। आपकी भी पृष्ठभूमि शायद ऐसी रही होगी। हम परमेश्वर के वचन के बहुत बड़े ऋणी हैं क्योंकि केवल परमेश्वर का वचन ही गरीबों को मान देता है। राजनीतिज्ञ नहीं करेंगे यह मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ। उन्हें केवल वोट चाहिए गरीबों का कल्याण नहीं। परमेश्वर गरीबों का कल्याण करता है और यह परमेश्वर की एक अद्भुत व्यवस्था थी। अतः रूत इस नियम का लाभ उठाती है। जो हमें बड़ा विचित्र लगता है। वह गरीब भी थी और परदेशी भी थी। उसने सिला बीनने की अनुमति मांगी और नाओमी ने उसे जाने दिया।

: r 2%3 में हम पढ़ते हैं,

“इसलिये वह जाकर एक खेत में लवनेवालों के पीछे बीनने लगी, और जिस खेत में वह संयोग से गई थी वह ऐलीमेलेक के कुटुम्बी बोअज़ का था।”

यदि आपने उस दिन रूत को सड़क जाते हुए देखा होता तो आप देखते कि एक लड़की जा तो रही है परन्तु जानती नहीं कि किस खेत में जाए। वह बोअज़ के खेत में कैसे गई? उसका बोअज़ के खेत में जाना बहुत ही महत्वपूर्ण था। यदि वह वहाँ नहीं जाएगी तो आप ज्योतिषियों से कह दें कि उनका बैतलहम आना किसी काम का नहीं है क्योंकि यीशु का जन्म वहाँ नहीं होगा। आप चरवाहों से भी कह सकते हैं कि वे पहाड़ों में ही रहें क्योंकि यीशु बैतलहम में जन्म नहीं लेगा। वह सही खेत कैसे चुनेगी?

जब मैं बैतलहम में था तब मैं सड़क पर चला। मैं उस मार्ग पर तो नहीं था जिस पर रूत चली थी परन्तु वह उससे अधिक दूर नहीं था। मैं चलते चलते उसके बारे में ही सोच रहा था। मेरे विचार में हमने बोअज़ के खेतों का स्थान खोज लिया है। वे बैतलहम के पहाड़ की तलहटी में थे। उस युग के इस्राएल देश में बैतलहम एक विशेष नगर था। सब नगर पहाड़ों पर बसे थे और बैतलहम अलग नहीं था। स्पष्ट है कि वहाँ घाटी में जो उपजाऊ भूमि है वह बोअज़ के खेत थे। उस दिन जब रूत शहर से निकली तो उसे नहीं पता था कि कहाँ जाएँ। धर्मशास्त्र में लिखा है, “जिस खेत में वह संयोग से गई थी वह ऐलीमेलेक के कुटुम्बी बोअज़ का था।” अब

एक प्रश्न उठता है, “उसके लिए सही खेत में जाना अति महत्वपूर्ण था तो उसने बोअज़ का खेत कैसे चुना? क्या परमेश्वर ने लाल और हरी बत्तियाँ लगाई थीं या उस ओर तीर का चिन्ह लगाया था? नहीं। तब क्या आकाशवाणी हुई थी? नहीं। उसे शायद दर्शन हुआ? नहीं, दर्शन भी नहीं। तब वह लड़की कैसे सही खेत में पहुँची? आइए हम रूत से ही पूछते हैं।” “रूत, हमें पूरा विश्वास है कि तुम्हें बोअज़ के खेत में जाने के लिए किसी न किसी प्रकार की अगुवाई अवश्य प्राप्त थी।” वह कहेगी, “नहीं, मुझे तो कुछ भी नहीं पता था। आप रूत की पुस्तक ठीक से पढ़ें। वहां लिखा है कि मैं संयोग से जिस खेत में पहुँची वह बोअज़ का खेत था।” मानव दृष्टिकोण से तो यह संयोग प्रतीत होता है परन्तु परमेश्वर के दृष्टिकोण से वह कुछ और था। वह उसे उचित खेत में ले जा रहा था परन्तु वैसे नहीं जैसे अनेक जन आज कल्पना करते हैं। कुछ लोग परमेश्वर की इच्छा के प्रकाशन को ऐसा सोचते हैं जैसे उसने तार भेजा हो या स्वर्ग से कोई पत्र आया हो। मेरे मित्रों परमेश्वर आज के युग में ऐसा नहीं करता है और मैं नहीं सोचता कि उसने पहले भी ऐसा किया होगा। निःसन्देह उसने पुराने नियम में अनेकों का सीधा मार्गदर्शन किया है परन्तु रूत उनमें से नहीं है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि अन्य निर्णयों की तुलना में रूत का यह निर्णय अत्यधिक महत्व का है। परमेश्वर ने योना से कहा था, — 1:2, “उठकर उस बड़े नगर नीनवे को जा।” और उसने यिर्मयाह तथा यहजेकल से कहा था कि वे खुलकर बोलें परन्तु मैं यहां यह कहूंगा कि इन लोगों को परमेश्वर का सीधा निर्देश इतना महत्वपूर्ण नहीं था जितना कि रूत का सही खेत में प्रवेश करना क्योंकि बैतलहम में यीशु का जन्म उसके द्वारा सही खेत में प्रवेश करने पर निर्भर था। सब कुछ परमेश्वर के अधीन ही था और वह पार्श्व में रहकर मार्गदर्शन कर रहा था। परमेश्वर की इच्छा के बारे में यही एक अद्भुत बात है। मैं नहीं मानता कि परमेश्वर के लिए आवश्यक है कि वह हमें सड़कों का नक्शा दे। कभी कभी मैं सोचता हूँ कि वह ऐसा करे। आज मैं कुछ लोगों की बातें सुनता हूँ जैसे कि परमेश्वर ने उन्हें सड़कों का नक्शा दिया है। वे कहते हैं, “मेरे लिए परमेश्वर की इच्छा थी कि यह करूँ और मैं जानता हूँ कि यह परमेश्वर की इच्छा है।” काश, मैं भी ऐसा निश्चित एवं पक्का होता!

वर्षों पूर्व जब मैं कलीसिया में पासबान था तब मुझे अन्य कलीसियाओं से दो फोन आए। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि कौन सा निमंत्रण स्वीकार करूँ। मैं सच कह रहा हूँ। मैं फर्श पर गिर कर परमेश्वर को पुकारने लगा कि वह मेरा मार्गदर्शन करे कि कौन सा निमंत्रण स्वीकार करूँ परन्तु उसने उत्तर नहीं दिया। मुझे कोई दर्शन भी नहीं मिला। उसी समय मैं ने डॉ. हेरी आयरनसाइड को अपने निर्णयों के बारे में कहते सुना जो उन्हें अपने जीवन में लेने थे। उनमें से अस्सी प्रतिशत (मेरे विचार में यही आँकड़े उन्होंने दिए थे।) निर्णय उन्होंने ऐसे लिए जिनके बारे

में वे उस समय नहीं जानते थे कि वे परमेश्वर की इच्छा में थे। वह काफी समय तक नहीं जान पाए थे कि वह परमेश्वर की इच्छा थी। उनकी यह बात सुनकर मैं घर गया और अपनी पत्नी से कहा कि परिस्थिति साफ हो गई है और हमें केलिफोर्निया जाना चाहिए। मुझे निश्चित तो नहीं था परन्तु मुझे ऐसा प्रतीत हुआ।

जहाँ तक आपके जीवन में परमेश्वर की इच्छा का विषय है, आप यदि यह सोचें कि वह प्रत्येक कोने पर हरी बत्ती लगा देगा या तीर का चिन्ह लगाएगा या आकाशवाणी होगी तो आप भ्रम में हैं। वह ऐसा नहीं करता है और जब मैं मनुष्यों से ऐसी बात सुनता हूँ तब समझ जाता हूँ कि उनके साथ कोई विशेष समस्या है या वे किसी को मूर्ख बनाने का प्रयास कर रहे हैं। परन्तु एक पल रुकिये, डॉ. आयरनसाइड ने यह भी कहा था कि आगे चलकर उन्हें ज्ञात हुआ कि उनके निर्णय परमेश्वर की इच्छा में थे या नहीं। मेरे विचार में परमेश्वर हमें कभी अनुचित मार्ग पर भी जाने देता है। इस पर कोई कहे, "तब तो आप बुरा निर्णय भी ले सकते हैं।" निःसन्देह, आप ऐसा कर सकते हैं। रोचक बात तो यह है कि आपके सामने दो मार्ग हों और आप गलत मार्ग चुन लें तो ऐसा कुछ नहीं है जो आपको लौट आने और नये सिरे से आरम्भ करने से रोकने वाला कोई नहीं। आप एक बात के विषय तो निश्चित हो सकते हैं : यदि आपके पास दो मार्ग हैं और आप गलत मार्ग चुन लें तो आपको समझ में आ जाएगा कि सही मार्ग कौन सा है। यह बड़े ही आश्चर्य की बात है कि आज मनुष्य आसान मार्ग को परमेश्वर की इच्छा मानते हैं, आसान मार्ग सदा ही परमेश्वर की इच्छा में नहीं होता है, निश्चय ही रूत के लिए तो यह आसान मार्ग नहीं था।